

कहानी - कर्म का फल

एक घने जंगल में एक बुजुर्ग लकड़हारा प्रतिदिन की तरह लकड़ी काटने गया था। उसकी चाल धीमी थी, उम्र के निशान उसके शरीर पर स्पष्ट थे। वह जंगल से लकड़ियों का गट्टा सिर पर रखकर लौट रहा था, तभी अचानक कुछ उसके सामने आकर गिरा। उसने एक पल रुककर देखा, लेकिन कुछ स्पष्ट नहीं हुआ। वह आगे बढ़ने ही वाला था कि पास की झाड़ियों से "ची-ची" की करुण ध्वनि सुनाई दी।

उसने झाड़ियों में जाकर देखा—एक नन्ही चिड़िया लहलुहान होकर गिरी पड़ी थी। लकड़हारे ने झटपट अपने सिर से लकड़ियों का गट्टा नीचे रखा और चिड़िया को अपने दोनों हाथों में सावधानी से उठा लिया। उसने अपने थैले से थोड़ा पानी निकाला और उसे पिलाया। चिड़िया की आँखों में दर्द तो था ही, पर उनमें एक याचना भी थी—मानो वह कह रही हो, "मुझे अकेला मत छोड़ो, मुझे भी साथ ले चलो।"

अब बुजुर्ग के सामने एक बड़ी दुविधा थी। एक हाथ में लाठी, दूसरे में लकड़ियों का गट्टा... और अब यह घायल चिड़िया। यदि वह चिड़िया को ले जाए, तो लकड़ियों का गट्टा छोड़ना पड़ेगा—और उस दिन चूल्हा नहीं जलेगा, यानी उसे भूखा रहना पड़ेगा। लेकिन चिड़िया की करुण पुकार ने उसके भीतर की करुणा को जगा दिया। उसने बिना देर किए निर्णय लिया—चिड़िया को लेकर जाएगा, चाहे कुछ भी हो। जैसे ही वह चिड़िया को लेकर आगे बढ़ा, पीछे खड़ा एक लगभग 20 वर्ष का युवक जो यह सब देख रहा था, बिना कुछ कहे बुजुर्ग की लकड़ियों का गट्टा उठा लिया और चुपचाप उसके पीछे चल पड़ा। घर पहुँचकर बुजुर्ग ने चिड़िया की मरहम-पट्टी की, उसे दाना-पानी दिया और आराम करने के लिए एक कोना दिया। चिड़िया अब शांत थी, और बुजुर्ग के चेहरे पर एक सुखद संतोष की रेखा थी। परंतु मन में एक चिंता भी थी—"आज चूल्हा कैसे जलेगा? धर्मपत्नी को क्या जवाब दूँगा?"

वह जब दरवाज़े की ओर लौटा, तो देखा कि उसका लकड़ियों का गट्टा ठीक वहीं रखा हुआ था। उसके चेहरे पर मुस्कान तैर गई, लेकिन मन में एक सवाल कौंध गया—"यह आया कैसे?" उत्तर मिला—कर्म का फल।

उसने चुपचाप गट्टा उठाया और रसोई में पत्नी को देते हुए कहा, "लो, चूल्हा जला लो, खाना बना लो।" पत्नी ने खाना बनाया, दोनों ने प्रेमपूर्वक भोजन किया और शांत मन से सो गए।

अब हर सुबह बुजुर्ग सबसे पहले चिड़िया को दाना-पानी देता। दिन बीतते गए, चिड़िया का घाव भरने लगा और वह उड़ने लायक हो गई। परंतु अब उड़ जाना आसान नहीं था। एक अनकहा, लेकिन मजबूत प्रेम का बंधन उस बुजुर्ग और चिड़िया के बीच बन चुका था। चिड़िया उड़ तो सकती थी, लेकिन अब वह वहीं रहने लगी।

वह कभी-कभी उड़ान भरती, आसमान में चक्कर लगाती, मधुर स्वर में गुनगुनाती—मानो अपने अन्य पक्षी साथियों को बुजुर्ग की ममता और करुणा की गाथा सुना रही हो। उसकी बातों से प्रेरित होकर अन्य पक्षी भी वहाँ दाना चुगने आने लगे। और उन पक्षियों को देखने के लिए गाँव के बच्चे भी आने लगे। जहाँ कभी वह बुजुर्ग दंपति अकेले और उदास रहा करते थे, आज वहाँ हँसी, चहचहाहट और बच्चों की किलकारियाँ गूँजती थीं। इस पूरी घटना में सबसे सुंदर बात यह थी कि उस चिड़िया को किसी पिंजरे ने कैद नहीं किया था, उसे बाँधा था तो सिर्फ प्रेम ने। क्योंकि सच ही तो है— "पिंजरे कैद करते हैं, लेकिन प्रेम का बंधन स्वतः जुड़ता है और उसमें सुख होता है।"

यह कहानी हमें यह सिखाती है कि यदि हम निर्लोभ भाव से, निष्काम कर्म करते हैं, किसी की मदद करते हैं, तो उसका फल हमें उसी जीवन में, और कहीं अधिक सुंदर रूप में मिल जाता है।

- निरंजना डांगे, बैतूल, मध्य प्रदेश।